DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR
B.A –PART 1 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-1 ,UNIT-9,
DETERMINANTS OF SOCIAL PERSONALITY
LECTURE-45

व्यक्तित्व के सामाजिक निर्धारक

DETERMINANTS OF SOCIAL PERSONALITY

प्रत्येक व्यक्ति एक समाज में रहता है |अतः समाज की परिस्थितियाँ जैसे –सामाजिक समूह ,सामाजिक संस्थानों,परिवार ,पास-पड़ोस आदि का प्रभाव व्यक्तित्व के विकास पर काफी पड़ता है |मनोवैज्ञानिकों ने इन कारकों से सम्बंधित बहुत से प्रयोगों का वर्णन किया है |इन सभी कारको की व्याख्या तो नहीं कर सकते परन्तु उनमे से कुछ कारको की व्याख्या निम्नांकित है –

(I) **माता तथा पिता (MOTHER AND FATHER)**-जन्म के बाद बच्चे की पहली अन्तःक्रिया माँ के साथ और फिर

पिता के साथ होती है |माता-पिता कई प्रकार के होते है |कुछ माता-पिता अपने बच्चों को जरुरत से ज्यादा दुलार प्यार करते है ,कुछ काफी शक्ति से पेश आते है और कुछ समय के अभाव के कारण अपने बच्चो को उचित दुलार प्यार चाह कर भी नहीं दे पाते है |मनोवैज्ञानिकों के प्रयोग से यह स्पष्ट हो गया है की अधिक दुलार प्यार देने वाले माता-पिता के बच्चों में बड़ा होने पर असुरक्षा की भावना ,घबराहट का शील गुण तथा समायोजन से सम्बंधित समस्याएँ अधिक होती है |शक्ति से पेश आने वाले माता-पिता के बच्चों में अधीनस्थता का गुण अधिक विकसित हो जाता है | माता पिता से उचित मात्रा में दुलार प्यार न मिलने पर बच्चे लजालू तथा साम्वेगिक रूप से अस्थिर हो जाता है |

(II) **परिवार के सदस्यों का आपसी सम्बन्ध (RELATIONSHIP AMONG MEMBER OF FAMILY)**-कुछ परिवार ऐसा होता है जिसमे माता-पिता का एक दुसरे के प्रति स्नेह ,भाई-बहनों का एक दुसरे के प्रति स्नेह एवं अनुराग तथा परिवार के अन्य सदस्यों का भी एक दुसरे के प्रति स्नेह काफी मजबूत होता है | इस तरह

के वातावरण में पलने वाले बच्चे परिवार के अन्य सदस्यों का अनुकरण करते है और वैसा ही करना सीख लेते है | इसका परिणाम यह होता है की उनमे श्रेष्ठता का भाव,आत्म विश्वास तथा विश्वसनीयता का गुण विकसित होता है |कौनड्राई तथा सिमन (1974) ने इस तथ्य की पुष्टि अपने प्रयोगात्मक अध्ययनों के आधार पर किया है |झगड़ालू परिवार या ऐसे परिवार जहाँ के सदस्यों का आपस में एक दुसरे के प्रति स्नेह या अनुराग कम होता है,में पलने वाले बच्चों में हीनता का भाव ,अंतर्मुखता ,सांवेगिक अस्थिरता आदि का शीलगुण अधिक विकसित होते पाया जाता है |

(III) **जन्म क्रम (BIRTH ORDER)**-कुछ मनोवैज्ञानिकों का कहना है की व्यक्तित्व विकास पर बच्चों के जन्मक्रम का भी प्रभाव पड़ता है |एडलर (1931)ने जन्मक्रम को चार भागों में बाँटकर अध्ययन किया है-प्रथम जन्मक्रम,मध्य जन्मक्रम अंतिम जन्मक्रम तथा इकलौता बच्चा | एडलर ने अपने अध्ययन के आधार पर यह बतलाया है की प्रथम जन्मक्रम वाले बच्चे एकांतप्रिय तथा अंतर्मुखी होते है ,सबसे अंतिम जन्मक्रम वाले बच्चे में हीनता का भाव अधिक होता

है तथा आत्म विश्वास तथा आत्म-निर्भरता की कमी देखी गयी है |इकलौते बच्चों में दुसरे पर निर्भरता तथा आत्मकेंद्रिता आदि का शीलगुण विकसित होता है| ऐसे बच्चे स्वार्थी भी अधिक होते है |एडलर के अनुसार मध्य जन्मक्रम वाले बच्चों में आत्मविश्वास तथा अहम-शक्ति अधिक होता है |

(IV) **स्कूली प्रभाव (SCHOOL INFLUENCES)**-बच्चों के व्यक्तित्व के विकास पर स्कुल के वातावरण का भी प्रभाव पड़ता है |मनोवैज्ञानिकों के प्रयोगों से यह स्पष्ट हो गया है की बच्चों के व्यक्तित्व पर स्कुल का प्रभाव दो क्षेत्रों में पड़ता है | पहला ,स्कूली प्रभाव से बच्चों में शीलगुणों का विकास होता है| दूसरा,स्कूली प्रभाव से उनमे आत्म-संप्रत्यय विकसित होता है | हरलॉक (1978) के अनुसार ,वर्ग के सम्वेगिक वातावरण,शिक्षक,अनुशासन ,शैक्षिक उपलब्धि आदि का प्रभाव बच्चों के व्यक्तित्व के विकास पर सबसे अधिक पड़ते देखा गया है |काज,कोल तथा बेरोन (1976) ने अपने अध्ययन के आधार पर यह बतलाया है की यदि शिक्षक स्वयं ही कुसमायोजित व्यक्तित्व के होते है ,तो इससे उनके शिष्यों में असुरक्षा एवं

हीनता का भाव ,अप्रसन्नता आदि का शीलगुण विकसित होता है |जब शिक्षक का व्यक्तित्व समायोजित होता है तो इससे बच्चों में अच्छे-अच्छे सामाजिक शीलगुण विकसित होता है तथा ऐसे बच्चों में सच्चा आत्म-संप्रत्यय विकसित होता है |जिन बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि की प्रशंसा शिक्षको द्वारा की जाती है ,उन बच्चो में आत्मविश्वास ,उच्च अहम् शक्ति तथा सच्चा आत्म संप्रत्यय आदि तेजी से विकसित होता है |

(V) **पास-पड़ोस (NEIGHBOUR HOOD)**-बच्चों के व्यक्तित्व पर पास-पड़ोस का भी प्रभाव अधिक पड़ते देखा गया है | यदि पास-पड़ोस के लोग सभ्य तथा पढ़े-लिखे होते है तो इससे बच्चों में अच्छे शीलगुणों का विकास होता है | ऐसी परिस्थिति में हरलॉक (1978) के अनुसार ,बच्चों में अनुशासन की भावना,समझदारी,उत्तरदायित्व ,आत्मसम्मान आदि शीलगुणों का विकास होता है |दूसरी तरफ ,यदि पास-पड़ोस में चोर ,डकैत ,अपराधी व्यक्ति अधिक होते है ,तो बच्चे भी उन व्यवहारों का अनुकरण करने लगते है और धीरे-धीरे उनमे असामाजिक शीलगुण विकसित होने लगते है |

(VI) **सामाजिक स्वीकृति (SOCIAL ACCEPTANCE)-**सामाजिक स्वीकृति से तात्पर्य व्यक्ति को अन्य व्यक्तियों जिन्हें वह महत्वपूर्ण समझता है ,द्वारा प्रशंसा तथा अनुमोदन प्राप्त होने से होता है |प्रायः देखा गया है की व्यक्ति अपने माता-पिता ,शिक्षक तथा साथियों से ,सामाजिक स्वीकृति की तीव्र इच्छा रखता है | ऐसी परिस्थिति में वह अपने व्यक्तित्व में उन शीलगुणों को विकसित करने की कोशिश करता है जिसके द्वारा वह उन महत्वपूर्ण व्यक्तियों को प्रसन्न रखकर उनकी स्वीकृति तथा अनुमोदन प्राप्त कर सके| ऐसे व्यक्ति जिन्हें सामाजिक समूह जिसमे माता-पिता ,शिक्षक ,साथी-संगी आदि प्रमुख होते है ,द्वारा सामाजिक स्वीकृति प्राप्त होती है ,उनमे आत्म-विश्वास ,नेतृत्व का गुण ,श्रेष्ठता का भाव आदि शील गुण तीव्रता से विकसित होता है |दूसरी तरफ ,जिन व्यक्तियों को सामाजिक स्वीकृति प्राप्त नही होती है ,उनमे अंतर्मुखता आत्महीनता ,सामाजिक अभियोजन की कमी आदि शीलगुण विकसित हो जाते है |